TITLE CODE : UPMUL00792

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर, रविवार 14 मई 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2, अंक :12 पृष्ठ :8, मूल्य 2 रूपये

यूपी के नगर निगमों में फहराया भगवा

मुख्यमंत्री योगी के नेतृत्व में सिटी का सरताज बनी भाजपा

लोक पहल

लखनऊ। नगर निकाय चुनाव में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में पूरा उत्तर प्रदेश योगीमय हो गया और प्रदेश में एक बार फिर जमकर भगवा फहराया। प्रदेश के 17 नगर निगम सीटों पर भाजपा प्रत्याशियों ने जीत हासिल कर इतिहास रच दिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश की सभी 17 नगर निगम सीटों पर पहुंचकर भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशियों के लिए वोट मांगे थे। भाजपा की बड़ी जीत में मुख्यमंत्री योगी के कार्यों का परिणाम ने भी अहम भूमिका निभाई है। पिछली बार हारी मेरठ व अलीगढ़ की सीट भी भारतीय जनता पार्टी के खाते में गई। वहीं पहली बार बने शाहजहांपुर में भी कमल खिल उठा। यहां भी पहला नागरिक बनने का गौरव भाजपा उम्मीदवार अर्चना वर्मा को मिला।

भारतीय जनता पार्टी ने यूपी की सभी 17 सीटों पर प्रत्याशी उतारे थे। इनमें से कानपुर, बरेली व मुरादाबाद में भाजपा ने निवर्तमान महापौर पर ही दांव लगाया था,

शेष सभी सीटों पर नए कार्यकर्ताओं को चुनाव मैदान में उतारा था। 17 में से 17 सीटों पर योगी आदित्यनाथ के विकास कार्यों पर आमजन ने मुहर लगाई और कमल खिलाया।

भारतीय जनता पार्टी और योगी के प्रति आमजन का विश्वास है कि पार्टी के चार प्रत्याशियों ने दूसरी बार महापौर बनने का गौरव हासिल किया। कानपुर से प्रमिला पांडेय, मुरादाबाद से विनोद अग्रवाल और बरेली से उमेश गौतम अनवरत दूसरी बार महापौर बने, जबकि हरिकांत अहलूवालिया इसके पहले भी मेरठ के महापौर रह चुके हैं। झांसी में भाजपा के बिहारी लाल ने सबसे पहले जीत हासिल की। उन्हें कुल 123503 वोट मिले।

भाजपा ने प्रदेश के 17 नगर निगमों पर कब्जा कर सिटी का सरताज का खिताब हासिल कर लिया है। भाजपा प्रत्याशियों में लखनऊ से सुषमा खर्कवाल, गोरखपुर से डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव, वाराणसी से अशोक तिवारी, प्रयागराज से गणेश चंद्र उमेश केसरवानी, अयोध्या से गिरीश पति त्रिपाठी, कानपुर से प्रमिला पांडेय, अलीगढ़ से प्रशांत सिंघल, मेरठ से हरिकांत अहलूवालिया, झांसी से बिहारी लाल आर्य, शाहजहांपुर से अर्चना वर्मा, सहारनपुर से अजय सिंह, मुरादाबाद से विनोद अग्रवाल, मथुरा–वृंदावन से विनोद अग्रवाल, गाजियाबाद से सुनीता दयाल, बरेली से उमेश गौतम, फिरोजाबाद से कामिनी राठौर, आगरा से हेमलता दिवाकर ने महापौर पद पर जीत हासिल की है।

शाहजहांपुर की पहली मेयर बनी अर्चना वर्मा

शाहजहांपुर। नगर निगम बनने के बाद पहली बार महापौर पद के लिए हुए चुनाव में भाजपा प्रत्याशी अर्चना वर्मा ने कांग्रेस की निकहत इकबाल को पराजित कर 23 साल बाद नगर निगम पर भाजपा के सूखे को खत्म कर कमल खिला दिया। समाजवादी पार्टी से घोषित मेयर प्रत्याशी अर्चना वर्मा ने रातों रात दल बदलकर भाजपा का दामन थाम लिया था। भाजपा ने उन्हें अपना मेयर पद का प्रत्याशी घोषित कर दिया। प्रदेश सरकार के वित्तमंत्री सुरेश खन्ना, पीडब्ल्यूडी मंत्री जितिन प्रसाद और सहकारिता मंत्री जेपीएस राठौर की प्रतिष्ठा की सीट बनी शाहजहांपुर नगर निगम की मेयर सीट पर भाजपा प्रत्याशी ने जीत हासिल कर इतिहास रच दिया। भाजपा प्रत्याशी को 80740 मत प्राप्त हुए। उन्होंने 30256 वोटों से जीत हासिल की जबकि उनकी निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस प्रत्याशी निकहत इकबाल को 50484 मत हासिल हुए। समाजवादी पार्टी की माला राठौर 20144 तथा बसपा प्रत्याशर शगुफ्ता अंजुम को 5547 वोट ही हासिल हुए। यहां सपा–बसपा की जमानत जब्त हो गई।

कर्नाटक में भाजपा को झटका, कांग्रेस की बड़ी जीत

गरीबों की शक्ति ने भाजपा के पूंजीपति मित्रों की ताकत को हराया कांग्रेस को जिताया : राहुल गांधी

कांग्रेस को 135, भाजपा को 65 व जेडीएस को 17 सीटों पर हासिल की विजय

बेंगलुरू एजेंसी। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने बड़ी जीत हासिल करके भाजपा के कांग्रेस मुक्त भारत के सपने को चकनाचूर करते हुए भाजपा को ही दक्षिण मुक्त कर दिया।

कर्नाटक की 224 विधानसभा सीटों के लिए हुए मतदान में कांग्रेस ने 135 सीटों पर विजयी हासिल की। जबकि सत्तारूढ़ दल भाजपा कांग्रेस से आधी सीटें भी प्राप्त नहीं कर सकी। उसे मात्र 65 सीटों पर विजयी हासिल हुई। किंगमेकर की भूमिका निभाने के लिए बेताव जेडीएस के भी सपने चकनाचूर हो गए और उसे 19 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा। 4 सीटों पर अन्य ने जीत हासिल की। चुनाव से पहले सभी पार्टियों ने राज्य के हर हिस्से में जनता को अपनी ओर रिझाने की पुरजोर कोशिश की लेकिन अन्त में बाजी राहुल गांधी मार ले गए। बताया जाता है कि राहुल गांधी की

भारत जोड़ो यात्रा जिन स्थानों से गुजरी वहां की 75 प्रतिशत विधानसभा सीटों पर कांग्रेस ने जीत हासिल की।

दरअसल कर्नाटक छह क्षेत्रों में फैला 224 विधानसभा सीटों वाला राज्य है। मध्य कर्नाटक में 21 विधानसभा सीटें है और यह क्षेत्र भाजपा का गढ़ माना जाता है। यहां भाजपा इस बार केवल 7 सीटें ही जीत सकी जबकि कांग्रेस को 21 में विजयी हासिल हुई। दक्षिण कर्नाटक राज्य का सबसे बड़ा इलाका है यहां 55 विधानसभा सीटों में से कांग्रेस को 37, भाजपा को 04 और जेडीएस 12 सीटें मिली है। बृहद बैंग्लोर के इलाके में कुल 28 सीटें आती है यहां कांग्रेस को 15 तथा भाजपा को 13 सीटों पर जीत हासिल हुई है। कांग्रेस ने अपनी शानदार जीत के लिए राज्य के नेताओं की बनाई गई स्थानीय रणनीति के अलावा पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा का भी असर की भूमिका को भी अहम माना है। कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता और सांसद जयराम रमेश ने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा से पार्टी को एकजुट करने और कैडर को पुर्नजीवित करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

राहुल गांधी ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी की जीत पार्टी के कार्यकर्ताओं की जीत है, उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं का आभार जताया। राहुल गांधी ने कहा कि सबसे पहले मैं कर्नाटक की जनता को पार्टी के कार्यकर्ताओं को और उन सब नेताओं को जिन्होंने कर्नाटक में काम किया, उन्हें बधाई और धन्यवाद देता हूं।

कर्नाटक के चुनाव में एक तरफ क्रॉनी कैपिटलिस्ट की ताकत थी और दूसरी तरफ जनता की शक्ति। शक्ति ने ताकत को हरा दिया।

कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी गरीबों के साथ खड़ी हुई। कर्नाटक में कांग्रेस की बड़ी जीत में राज्य स्तरीय नेताओं में पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धरमैया और आठ बार से विधायक डीके शिवकुमार को मुख्य शिल्पकार माना जा रहा है। पार्टी इन्हीं में से किसी एक को राज्य का मुख्यमंत्री बनाकर बागडोर सौंप सकती है। फिलहाल इन दोनों नेताओं को प्रदेश में बड़ी जिम्मेदारी मिलने वाली है।

भाजपा की अर्चना वर्मा बनी शाहजहांपुर की पहली महापौर

कांग्रेस की निकहत इकबाल को करीब 30 हजार मतों से किया पराजित

लोक पहल

शाहजहांपुर। 23 साल बाद नगर पालिका से नगर निगम बने शाहजहांपुर नगर निगम पर भारतीय जनता पार्टी ने जीत हासिल कर भगवा फहरा दिया। यहां भाजपा प्रत्याशी अर्चना वर्मा ने कांग्रेस प्रत्याशी निकहत इकबाल को करीब 30 हजार मतों से हराकर शहर की महापौर बनकर इतिहास रच दिया। यहां पर समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी माला राठौर तीसरे स्थान पर रहीं और वह अपनी जमानत भी नहीं बचा पाई। इसके साथ ही 23 वर्षों से सपा का गढ़ बनी इस सीट पर भाजपा ने जीत हासिल कर अपना परचम फहरा दिया। यहां बसपा प्रत्याशी शगुफ्ता अंजुम को 5543 मत मिले जबकि आम आदमी प्रत्याशी सुमन वर्मा को 2697 मत हासिल हुए। नगर निगम बोर्ड पर भी भाजपा ने भारी जीत हासिल की है। कुल 60 वार्ड में से 41 वार्ड में भाजपा के पार्षदों ने जीत हासिल की है। 14 वार्ड में निर्दलीय प्रत्याशी जीते हैं जबकि कांग्रेस ने 3 और आप, बसपा को एक–एक वार्ड में जीत हासिल हुई है। 23 साल से नगर पालिका पर कब्जा जमाए समाजवादी पार्टी का यहां सूपड़ा साफ हो गया। उसे एक वार्ड पर भी जीत हासिल नहीं हुई है।

अर्चना वर्मा, भाजपा	80740 वोट
निकहत इकबाल कांग्रेस	50484 वोट
माला राठौर सपा	20144 वोट
शगुफ्ता अंजुम, बसपा	5543 वोट
सुमन वर्मा, आम आदमी पार्टी	2697 वोट

भाजपा–सपा को सबक तो कांग्रेस को आक्सीजन दे गए निकाय चुनाव

केवल पांच निकायों में ही जीत हासिल कर सकी भाजपा, नगर निगम में सपा का सूपड़ा साफ

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। लोकसभा चुनाव का सेमी फाइनल माने जा रहे नगर निकाय चुनाव प्रमुख राजनैतिक दलों के लिए काफी अहम माने जा रहे थे सभी राजनीतिक पार्टियों ने आगामी चुनावों के मद्देनजर बेहतर तैयारियां की और दावा किया कि उनका वार्ड से लेकर बूथ तक प्रबंधन उत्कृष्ट है और उन्हें ही जीत हासिल होगी लेकिन चुनाव परिणामों के आने के बाद यह साफ हो गया है कि जिले की जनता ने मिले जुले परिणाम देकर सभी दलों को सचेत कर दिया है। निकाय चुनाव के परिणाम जहां समाजवादी पार्टी के लिए चिंता की लकीरें छोड़ गया है वहीं कांग्रेस को आक्सीजन मिलती नजर आ रही है। बात अगर सत्ताधारी पार्टी भाजपा की जाए तो बेहतर बूथ प्रबंधन और मजबूत रणनीति का दावा करने वाली भाजपा को 12 में से 7 निकायों में हार का सामना करना पड़ा है इनमें दो नगर पालिका परिषद भी शामिल है। नगर पंचायतों में भी भाजपा का प्रदर्शन संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। आठ नगर पंचायतों में से केवल तीन स्थानों पर ही विजयी हासिल हो सकी। तीन मंत्री, दो सांसद, छह विधायक, पांच एमएलसी, जिला पंचायत अध्यक्ष और 15 ब्लाक प्रमुख की टीम से सुसज्जित भाजपा के लिए निकाय चुनावों में जिस तरह के परिणाम सामने आए हैं वह पार्टी नेतृत्व के लिए गंभीरा चिंता का विषय हो सकते है। आगामी लोकसभा चुनाव में भी इन परिणामों का असर दिखाई दे सकता है। टिकट बंटवारे से लेकर सबसे ज्यादा बगावत के सुर भाजपा में ही सुनाई दिये। हालांकि पार्टी ने बागी नेताओं को मनाने का पुरजोर प्रयास किया लेकिन पुवायॉ में पार्टी किसान मोर्चा के पूर्व जिलाध्यक्ष गंगाराम मिश्रा व जलालाबाद में निवर्तमान चेयरमैन मुनेन्द्र गुप्ता को मनाने में पार्टी नाकाम रही। हालांकि पुवायॉ में गंगाराम मिश्रा की बगावत चुनाव परिणाम को प्रभावित नहीं कर सकी और यहां पार्टी

प्रत्याशी संजय गुप्ता ने बड़ी जीत हासिल की लेकिन जलालाबाद में मुनेन्द्र गुप्ता की बगावत से पार्टी का किला ढह गया और यहां सपा ने पहली बार अपना चेयरमैन बना लिया। भाजपा ने बागी नेताओं को मनाने के साथ ही उन पर कार्यवाही भी की और 12 नेताओं को संगठन से बाहर निकाल दिया गया। शहर के अलावा अन्य निकायों में पार्टी बागी नेताओं से हुए डेमेज को कंट्रोल करने में नाकाम रही। पार्टी के बड़े नेताओं की सभाएं और जनसम्पर्क भी काम नहीं आ सका।

तिलहर में वित्तमंत्री सुरेश खन्ना व पीडब्ल्यूडी जितिन प्रसाद ने पार्टी प्रत्याशी निर्मला गुप्ता के पक्ष में जनसभाएं व जनसम्पर्क कर जिताने की अपील की लेकिन वह चुनाव हार गई है। इसी तरह जलालाबाद में डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्या, मंत्री सुरेश खन्ना व मंत्री जितिन प्रसाद ने पार्टी प्रत्याशी मनमोहन द्विवेदी के पक्ष में जमकर माहौल बनाया लेकिन वह तीसरे स्थान पर पहुंच गए। इसी तरह नगर पंचायतों में भी पार्टी का प्रदर्शन कोई खास नहीं रहा। पार्टी केवल तीन नगर पंचायतों पर ही अपना कब्जा जमा सकी। जबकि दो

पर कांग्रेस ने जीत हासिल की। खुटार और निगोही में निर्दलीय प्रत्याशी मैदान मार ले गए। अगर बात रिकार्ड की जाए तो भारतीय जनता पार्टी ने गत विधानसभा चुनाव में सभी छह सीटों पर विजयी हासिल कर विपक्ष का सूपड़ा साफ कर दिया था। पार्टी नगर निकाय चुनाव में भी सभी सीटों पर अपने बेहतर बूथ प्रबंधन और नेताओं की लोकप्रियता तथा योगी और मोदी के नाम पर मिलने वाले वोट के सहारे जीत का दावा कर रही थी लेकिन चुनाव परिणामों में भाजपा नेताओं को आत्म चिंतन करने के लिए मजबूर जरूर कर दिया है। लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल माने जा रहे नगर निकाय चुनाव में भाजपा का उल्लेखनीय जीत हासिल न करना कहीं न कहीं पार्टी की रणनीति का विफल होना ही माना जायेगा। बात कांग्रेस की जाए तो कांग्रेस ने निकाय चुनाव में पहले से बेहतर प्रदर्शन किया है। एक ओर जहां मेयर पद पर कांग्रेस की निकहत इकबाल ने 50 हजार से अधिक मत हासिल कर दूसरे स्थान पर रहकर सभी को चौंका दिया वहीं पार्टी ने कांट और कटरा नगर पंचायत अध्यक्ष पद पर जीत हासिल की

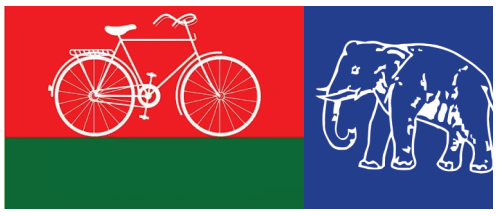

है। कांग्रेस के पक्ष में गए यह परिणाम उसे आक्सीजन देने का काम करेंगे।

समाजवादी पार्टी के नेताओं में चल रही आपसी खींचतान और संगठन पर ढीली होती पकड़ तथा भीतरघात के चलते पार्टी को जहां एक ओर अन्य निकायों में भी नुकसान हुआ है वहीं नगर निगम में सपा अपनी जमानत बचाने तक में नाकाम रही है। नगर निगम में पार्टी ने अर्चना वर्मा को अपना प्रत्याशी घोषित किया था लेकिन पार्टी के रणनीतिकार अर्चना वर्मी की रणनीति को भांप नहीं पाए और रातो रात पार्टी प्रत्याशी अर्चना वर्मा ने समाजवादी पार्टी को छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया। भाजपा ने उन्हें अपना प्रत्याशी घोषित कर दिया। अब समाजवादी पार्टी के पास एक बेहतर प्रत्याशी का चुनाव करना मुश्किल हो गया। आनन फानन में सपा नेता सर्वेश राठौर की पुत्रवधू माला राठौर को पार्टी ने अपना प्रत्याशी बनाया लेकिन छिन्न भिन्न संगठन, पार्टी नेताओं की उदासीनता और जिलाध्यक्ष तनवीर खां की हठधर्मिता के चलते पार्टी प्रत्याशी माला राठौर अपनी जमानत भी नहीं बचा पाई। यहां तक कि सपा जिलाध्यक्ष तनवीर खां के भाई भी पार्षदी का चुनाव हार गए। नगर निगम में जहां 41 वार्डो पर भाजपा ने जीत हासिल की वहीं 14 वार्ड में निर्दलीय प्रत्याशी विजयी रहे। तीन वार्ड में कांग्रेस, 1 वार्ड में बसपा व आम आदमी पार्टी ने जीत हासिल की। नगर निगम में समाजवादी पार्टी का सूपड़ा साफ हो गया।

प्रदेश में हाशिए पर चल रही कांग्रेस के लिए नगर निकाय चुनाव एक उम्मीद का किरण बनकर आये हैं। नगर निगम में कांग्रेस प्रत्याशी निकहत इकबाल ने 50 हजार से अधिक मत हासिल कर सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। वहीं मुस्लिम वोटों का रूझान भी पूरे जिले में कांग्रेस की ओर दिखाई दिया। जो पार्टी के लिए एक शुभसंकेत है। फिलहाल जिले में जहां नगर निगम में दूसरा स्थान हासिल कर व दो नगर पंचायत अध्यक्ष पद कब्जा कर कांग्रेस अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में कामयाब रही है। पार्टी प्रत्याशी मुख्त्यिार अहमद ने कटरा नगर पंचायत व बुनारा बेगम ने कांट नगर पंचायत पर जीत हासिल की है।

शाहजहांपुर में खामियों और अव्यवस्थाओं के बीच 55.48 प्रतिशत मतदान

शहर में सबसे कम तो अल्हागंज में जमकर बरसे वोट

लोक पहल

शाहजहांपुर। नगर निकाय चुनाव के लिए खामियों, अव्यवस्थाओं और छुटपुट घटनाओं के बीच मतदान शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हो गया। नगर निगम सहित जनपद की तीन नगर पालिकाओं और आठ नगर पंचायतों में छुटपुट घटनाओं और झड़पों के बीच मतदान शांति के साथ संपन्न हुआ। कुल 55.48 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। सबसे कम मतदान नगर निगम क्षेत्र में हुआ। यहां केवल 50.78 प्रतिशत मतदाताओं ने वोट डाले।

अल्हागंज नगर पंचायत में 73.09 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग कर जिले में शीर्ष स्थान हासिल किया। नगर निगम व नगर पालिका, नगर पंचायत

में मतदान के दौरान फर्जी वोटिंग की शिकायतें सामने आई जिनको लेकर पूरे दिन पुलिस महकमा हलाकान रहा। जिले में 242 मतदान केंद्र बनाए गए थे। इनमें 654 मतदान स्थल थे। सुबह सात बजे से मतदान शुरू हुआ और शाम 6 बजे तक जारी रहा । कस्बों में तीखी धूप के बावजूद मतदाताओं ने उत्साह दिखाया। सुबह नौ बजे तक जिले में केवल 09.43 प्रतिशत मतदानर हुआ था। इसके बाद मतदान की रफ्तार ने तेजी पकड़ी। हालांकि दोपहर एक से तीन बजे तक सबसे कम वोटिंग हुई। दोपहर तीन से छह बजे तक फिर मतदाताओं ने तेजी दिखाई। घर का कामकाज निपटाने के बाद महिलाएं वोट डालने पहुंचीं तो मतदान प्रतिशत ने गति पकड़ी। कई मतदान केन्द्रों पर ईवीएम खराब होने की शिकायतें भी मिली जिसके चलते मतदान बाधित रहा। तमाम वार्ड में मतदाओं के नाम मतदाता सूची से गायब होने के कारण हजारों मतदाता मतदान से वंचित रह गए।

लोकतंत्र के महायज्ञ में माननीयों ने डाली आहूति

प्रताप इंक्लेव मतदान केन्द्र पर वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

प्रदेश सरकार के पीडब्ल्यूडी मंत्री जितिन प्रसाद ने सुदामा प्रसाद विद्यालय मतदान केन्द्र पर डाला वोट

प्रदेश सरकार के सहकारिता मंत्री जेपीएस राठौर ने सुदामा प्रसाद विद्यालय मतदान केन्द्र पर डाला वोट

राज्यसभा सांसद मिथिलेश ने अपनी पत्नी पूर्व विधायक शकुन्तला देवी के साथ किया मतदान।

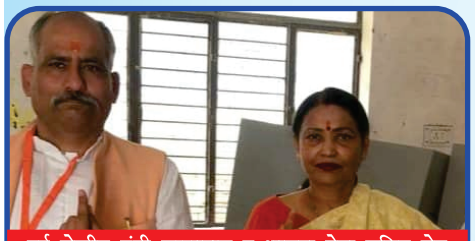

पूर्व केन्द्रीय मंत्री कृष्णाराज व भाजपा नेता सुचित सेठ ने डाला वोट

पूर्व एमएलसी जयेश प्रसाद ने अपनी पत्नी नीलिमा प्रसाद के साथ किया मताधिकार का प्रयोग

होम्योपैथ चिकित्सक डा. रवि मोहन व डा. संगीता मोहन ने लोकतंत्र के महायज्ञ में डाली आहूति

उद्योग व्यापार मण्डल के जिलाध्यक्ष कुलदीप सिंह दुआ ने अपने परिवार के साथ डाला वोट

शाहजहांपुर। शहर की सरकार चुनने के लिए हुए मतदान में जहां एक ओर आम मतदाताओं में उत्साह की भारी कमी दिखाई दी वहीं दूसरी ओर जनपद के नेताओं और शहर की अहम शख्सियतों ने मतदान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

मौसम का सितम तो खामियों से भी ठिठके कदम

हजारों मतदाताओं के नाम लिस्ट से गायब बूथ पर पहुंचकर भी निराश लौटे मतदाता
जमीनी स्तर पर ध्वस्त दिखाई दिया भाजपा का बूथ प्रबंधन, सुरेश खन्ना की अपील भी रही बेअसर

कक

शाहजहांपुर।कुछ मौसम बेरहम था तो कुछ मतदाता सूची की खामियों ने भी मायूस किया। नतीजा चिलचिलाती धूप में तमाम मतदाता घरों से बाहर नहीं निकले और जो निकले भी तो उन्हें बूथ पर पहुंचकर निराश लौटना पड़ा। हाथ में मतदाता पहचान पत्र होने के बाद भी वह सूची में अपना नाम ढूंढते रहे।व्यवस्था की खामियों को कोसते हुए वह घर लौट गए,और शाहजहांपुर शहर का मतदान प्रतिशत 50 आकर दम तोड़ गया।वैसे शाहजहांपुर जिले में जिले में शाम छह बजे तक करीब 55 फीसदी मतदान दर्ज किया गया। निकाय चुनाव के लिए मतदान शुरू होते ही बूथों पर मतदाताओं की कतार बढ़ने लगी, लेकिन दिन चढ़ने के साथ यह छोटी होने लगी थी। तीखी धूप से बेहाल लोग घरों से बाहर निकलने से कतराते रहे। खासतौर से महिला मतदाताओं में मतदान के प्रति दोपहर में रूझान कम दिखा। बूथों के बाहर पर्याप्त छाया का इंतजाम न होने से भी दिक्कत आई। रही सही कसर सरकारी व्यवस्था और पार्टियों के बूथ प्रबंधन ने पूरी कर दी। विश्व की सबसे बड़ी पार्टी का तमगा लेकर चलने वाली भाजपा में पन्ना प्रमुख से लेकर बूथ समिति, मंडल अध्यक्ष, वार्ड अध्यक्ष, वार्ड प्रभारी और न जाने कितने पदाधिकारियों की फौज दिखाई देती रही लेकिन जमीनी स्तर पर सारी व्यवस्था धरी रह गयी हर जिले में एक प्रभारी मंत्री बनाया गया रोज बैठकों का दौर चलता रहा, लेकिन यह सब सोशल मीडिया और समाचार पत्रों तक ही सीमित होकर रह गया एक एक वार्ड में हजारों वोटरों का नाम मतदाता सूची से गायब होना कहीं न कहीं भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं सक्रियता पर प्रश्न चिन्ह अवश्य खड़ा करता है। शायद यही कारण रहा कि अधिकांश केंद्रों पर दोपहर 12 बजे के बाद सन्नाटा पसरा रहा। कुछ मतदाता लोकतंत्र के महापर्व में अपनी हिस्सेदारी निभाने के लिए पूरे उत्साह के साथ घरों से निकले, मगर बूथ पर पहुंचने के बाद पता चला कि लिस्ट में उनका नाम नहीं है। शहर की आर्य नगर कालोनी, रामनगर,ब्रज बिहार कालोनी, चौक, रंग महला, चमकनी, जलालनगर, दिलाजाक सहित तमाम वार्ड में सैकड़ों मतदाता काफी देर तक लिस्ट खंगालते रहे, मगर लिस्ट में उनका नाम नहीं मिला। शहरी मतदाताओं ने मतदान से अधिक मौजमस्ती को प्राथमिकता दी और तमाम परिवार छुट्टी मनाने बाहर चले गए जबकि वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कई बार लोगों से ससुराल न जाकर मतदान करने की अपील की थी।

सम्पादकीय

कर्नाटक की जीत कांग्रेस के लिए उम्मीद की किरण

कर्नाटक में कांग्रेस को मिली ऐतिहासिक जीत कि यदि समीक्षा की जाए तो यह माना जा सकता है कि कर्नाटक में कांग्रेस की जीत में सभी समुदाय, सभी धर्म का पूरा समर्थन मिला है। 2014 के बाद से कहा जाता रहा है कि बीजेपी को कई चुनावों में जाति से ऊपर उठकर भी वोट किया गया है, यानी कि उसका एक ऐसा लाभार्थी वोटबैंक तैयार हो गया है जो पार्टी को लगातार वोट करता रहता है। अब कर्नाटक चुनाव में भी ऐसा ही पैटर्न देखने को मिला है जहां पर कांग्रेस को जातियों से इतर भी कई लोगों का वोट मिला है। बड़ी बात ये है कि जो कभी किसी दूसरे दलों के परंपरागत गढ़ माने जाते थे, उन इलाकों में भी कांग्रेस ने शानदार प्रदर्शन किया है।

कांग्रेस की इस बंपर जीत की कहानी में ओल्ड मैसूर के नतीजे सबसे चौकाने वाले रहे हैं। ये इलाका जेडीएस का गढ़ माना जाता है, पिछले कई चुनावों से जेडीएस जो किंगमेकर बनती थी, उसे इसी इलाके से ज्यादातर सीटें मिलती थीं। लेकिन इस बार यहां पर पूरी तरह कहानी पलट चुकी है। कांग्रेस की सीटों का आंकड़ा जो 135 सीटों तक पहुंचा उसमें ओल्ड मैसूर में मिले समर्थन एक बड़ा कारण बनकर उभरा है। ओल्ड मैसूर की 49 सीटों में से 30 पर कांग्रेस ने जीत हासिल की है। वहीं जेडीएस सिर्फ 14 सीटों पर सिमट कर रह गई है।

असल में ओल्ड मैसूर में वोक्लिंगा और मुस्लिम समाज की सबसे ज्यादा तादाद है। पिछले चुनावों का वोटिंग पैटर्न बताता है कि इस इलाके में एक तरफ वोक्लिंगा वोट जेडीएस को जाता है, तो वहीं मुस्लिम वोट हमेशा से ही कांग्रेस और जेडीएस दोनों में बंट जाता है। इसी वजह से इस इलाके में इतने सालों तक जेडीएस का एकतरफा राज देखा गया है लेकिन अब स्थिति बदल गई है, नतीजे बताते हैं कि इस बार मुस्लिम वोट ने एकतरफा होकर कांग्रेस को वोट दिया है। वहीं वोक्लिंगा समाज का भी उसे यहां अच्छा खासा समर्थन मिला है, पूरे कर्नाटक की बात भी करें तो चुनाव नतीजों से यह साफ हो गया है कि कर्नाटक में मुस्लिम मतदाताओं ने कांग्रेस के पक्ष में एकतरफा मतदान किया। असल में कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में बजरंल दल जैसे संगठनों पर बैन लगाने की बात कही थी। बीजेपी ने इसे बड़ा चुनावी मुद्दा समझा और बजरंग दल को बजरंग बलि से जोड़ दिया। यानि कि कांग्रेस पर भगवान हनुमान के अपमान का आरोप लगा दिया गया। पिछले विधानसभा चुनाव में 78 फीसदी मुस्लिमों ने कांग्रेस को वोट किया था, इस बार ये आंकड़ा उससे भी ज्यादा हो गया है। अब कांग्रेस को इस चुनाव में मुस्लिमों का तो समर्थन मिला ही है, उसने लिंगायत वोटबैंक में भी सेंधमारी की है। कर्नाटक में 16 फीसदी के करीब लिंगायत वोट है और पिछले कई चुनावों से ये एकमुश्त तरीके से बीजेपी के साथ जा रहा है।

लेकिन इस बार कहानी में बड़ा उलटफेर हुआ है। राज्य की करीब 78 लिंगायत बहुल सीटों में से 50 से ज्यादा सीटों पर कांग्रेस ने जीत हासिल की है। बीजेपी का आरक्षण वाला दांव भी फेल हुआ है और येदियुरप्पा का चुनाव ना लड़ना भी कांग्रेस को ही डायरेक्ट फायदा देकर गया है। यानी कि जेडीएस के गढ़ में की गई क्रांति, बजरंग दल से हुआ मुस्लिम वोटों का ध्रुवीकरण और बीजेपी के परंपरागत लिंगायत वोटबैंक में सेंधमारी ने ही कांग्रेस की इस प्रचंड बहुमत की सियासी स्क्रिप्ट लिखी है। इस बार ऐसा नहीं है कि कांग्रेस ने सिर्फ अपने गढ़ में अच्छा परफॉर्म किया हो, उसने बीजेपी के गढ़ में भी जीत का परचम लहराया है। इसी वजह से कांग्रेस की झोली में ये बड़ी जीत भी गई है जिसकी गूंज अब कई राज्यों तक सुनाई देने वाली है।

स्क्रीन पर सिमटती जिदंगी

रानी प्रियंका हरियाणा

आजकल हर व्यक्ति खुद में व्यस्त हैं। किसी से किसी को मिलने का वक्त नहीं। बात करने का वक्त नहीं। सुबह से शाम तक का वक्त अफरा –तफरी में बीत रहा है। ना पति को पत्नी के लिए टाइम ना पत्नी को पति के लिए। बच्चों को अभिभावक के होने या ना होने से कुछ फर्क नहीं पड़ता। व्यस्त जीवनचर्या का बड़ा हिस्सा मोबाइल निगला जा रहा है। जरूरी कामों को छोड़ भी नजरें मोबाइल स्क्रीन पर टिकी रहती है। लोग स्क्रीन पर घंटों घंटों डिबेट देख कर बिताते हैं। लेकिन घर में आए अखबार को नजर भर देखना भी गंवारा नहीं होता हैं।क्योंकि किसी के पास पढ़ने को वक्त नहीं हैं। बच्चों की जीवनशैली भी कुछ इस तरह की ही बन गई है। वह स्कूल से आते सीधा मोबाइल ही ढूँढ़ते है। इसका एक यह भी कारण हैं की बच्चों की आधी से ज्यादा पढ़ाई उस स्क्रीन पर ही होते हैं। बच्चों को इसका नुकसान उठाना पड़ रहा। बच्चों में मोटापा बढ़ता जा रहा है। आँखों की रौशनी कम होती जा रही है। बच्चों में डिप्रेशन, एंजाईटी, साईको, जैसी बीमारियाँ बढ़ती जा रही है। यह एक बड़ी समस्या हैं। उनसे मोबाइल छीनने पर वह घायल जानवर के जैसे वार कर देंगे,ऐसी

प्रतिक्रिया देते हैं। यह दशा दो से पाँच साल के बच्चों में कुछ ज्यादा पाए जाते हैं। इनमें कहीं ना कहीं अभिभावक का ही हाथ होता हैं। वह घर से बाहर जाने या नये नये एक्टिविटी कराने के बजाए उन्हें मोबाइल में खेलने या विडिओ दिखाने की आदत डाल देते हैं। बच्चे भी इनके आदी हो जाते हैं।

जबकि मोबाइल फोन में हानिकारक रेडियशन होते है,जो आँखों को काफी नुकसान पहुँचाते हैं।इसका असर लोगों के दिमाग पर होता हैं। सिर दर्द बना रहता है।इससे मांसपेशियों में काफी दर्द,कई तरह की बीमारियाँ हौले हौले ग्रसित कर जाती हैं।पूरे दिन के थकान और सिर दर्द से खीझे लोग एक दूसरे को सुनने समझने के बदले झिड़कते रहते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों में घंटों घंटों बैठ अध्ययन करने की आदत होनी चाहिए। बहरहाल देखा यही गया है की जो बच्चे छरू से सात घंटे तक पढ़ाई करने वाले छात्र कंपटीशन फाइट कर पाते हैं। खैर मोबाइल का लत तो कम ही होना चाहिए। कुल मिलाकर स्क्रीन से घिरी जिंदगी इतनी बंध चुकी हैं जो आसपास का दुख –सुख या कैसी भी स्थिति हो उसका कोई प्रभाव नही पड़ता हैं। मोबाइल जीवन का एक अंग बन चुका है। दुनिया मोबाइल में ही सिमट कर रह गई हैं। हम सब मोबाइल के कंधे में सिमट गये हैं। जीवन की संपूर्णता से लेकर सामाजिकता और व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक के लिए यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है।

मणिपुर में आखिर क्यों फैल रही है जातीय हिंसा

मणिपुर में अचानक भड़की हिंसा ने देखते–देखते जैसा भीषण रूप अख्तियार कर लिया, उससे एक बार फिर यह बात स्पष्ट हुई कि पूर्वोत्तर का इलाका कितना संवेदनशील है और इससे निपटने में कितनी सावधानी की जरूरत है। हिंसा की ताजा घटनाओं को मणिपुर हाईकोर्ट के उस हालिया फैसले के बाद बने हालात से जोड़ा जा रहा है, जिसमें राज्य सरकार को बहुसंख्यक मैतेई समुदाय के लिए एसटी दर्जे की सिफारिश केंद्र के पास भेजने का निर्देश दिया गया था। इसी निर्देश के खिलाफ ऑल ट्राइबल स्टूडेंट्स यूनियन मणिपुर ने आदिवासी एकजुटता मार्च का आयोजन किया था, जिस दौरान हिंसा भड़क उठी।

हालांकि, चाहे हाईकोर्ट का निर्देश हो या आदिवासी छात्रों का मोर्चा, इनकी तात्कालिक भूमिका भले हिंसा भड़कने में रही हो, प्रदेश में जातीय तनाव के हालात लंबे समय से बने रहे हैं। गैर–आदिवासी मैतेई समुदाय हालांकि राज्य की कुल आबादी का करीब 65 फीसदी है, लेकिन यह इंफाल के आसपास घाटी में ही केंद्रित है। क्षेत्रफल के लिहाज से इस समुदाय के पास राज्य का बमुश्किल 10 फीसदी भूभाग ही है। बाकी 90 फीसदी इलाकों में 35 फीसदी आदिवासी समुदायों के लोग फैले हुए हैं। ऐसे में जहां मैतेई समुदाय अपने लिए एसटी दर्जा जरूरी मानता है, वहीं आदिवासी समुदायों को लगता है कि उसे यह दर्जा मिल गया तो उनके अधिकार प्रभावित होंगे। तनाव बढ़ाने वाला एक अन्य नया कारक हैं म्यांमार से आने वाले शरणार्थी। ऐसे में प्रदेश में शांति व्यवस्था सुनिश्चित करने के क्रम में दो बातों का खास तौर पर ध्यान रखने की जरूरत है। एक तो यह कि पड़ोसी देश म्यांमार में बनते हालात का मणिपुर जैसे राज्यों की स्थितियों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इसलिए सरकार को म्यांमार के सैन्य शासन से बातचीत कर उसे गृहयुद्ध रोकने और अपनी शरणार्थी प्रबंधन व्यवस्था कायम करने के लिए मनाने के प्रयासों पर विशेष ध्यान देना होगा।

भारत में अपशिष्ट प्रबन्धन या अपशिष्ट निपटान

प्रो. मधुकर श्याम शुक्ल

भारत जैसी तेजी से विकसित होती हुई अर्थव्यवस्था बढ़ती शहरी आबादी बढ़ता जीवन स्तर उपभोक्तावादी संस्कृति का बढ़ना, बढ़ती खपत का स्तर तीव्र औद्योगिक विकास, विश्व मे उभरती अर्थव्यवस्थाओं में सामान्य रूझान है। इसी तरह भारत में तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या, क्रयशक्ति समानता मे वृद्धि से अधिक सामर्थ्य, संसाधनो के उपयोग की पहुँच कचरे की मात्रा में तेजी से वृद्धि साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में खुले में सौच की प्रवृत्ति के कारण प्रदूषण को जन्म देती है। निरन्तर बदलती जीवन शैली आधुनिक समाज के सम्मुख घरेलू तथा औद्योगिक स्तर पर उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट के उचित प्रबन्धन की गंभीर चुनौती प्रस्तुत की है। वर्ष दर वर्ष मे केवल अपशिष्ट की मात्रा में बढोत्तरी हो रही है, बल्कि प्लास्टिक और पैकेजिंग सामग्री की बढ़ती हिस्सेदारी के साथ ठोस अपशिष्ट के स्वरूप में भी बदलाव नजर आ रहा है। इसी अपशिष्ट प्रबन्धन की समस्या ने देष को इस विषय पर नये सिरे से सोचने को मजबूर किया है और इस सन्दर्भ में कई तरह के सराहनीय प्रयास भी किए जा रहे हैं परन्तु इस प्रकार के प्रयास अभी तक देश भर में व्यापक स्तर पर अपिशष्ट प्रबन्धन की समस्या सं निपटने के लिए अपनी उपयोगिता साबित करने मे असफल रहे है । अपरोक्त गंभीर समस्या के सार्थक समाधान हेतु शोधार्थी का अल्प प्रयास एक कदम है ।

अपशिष्ट का अर्थ– अपशिष्ट का शाब्दिक अर्थ 'अवंक्षित' 'अनुपयोगी' वर्ज्य या कचरा है। किसी भी पदार्थ का प्राथमिक उपयोग करने या होने के बाद जो शेष बचता है उसे अपशिष्ट या अवंक्षित पदार्थ कहा जाता है। अपशिष्ट निम्न प्रकार के होते है–खनन अपशिष्ट, औद्योगिक अपशिष्ट, कृषि अपशिष्ट, चिकित्सा अपशिष्ट, नगर पालिका अपशिष्ट, फिशरीय (मछली) अपशिष्ट, घरेलू अपशिष्ट ।

अपशिष्ट प्रबन्धनः– अपशिष्ट प्रबन्धन का आशय अपशिष्ट को एकत्रित करने उसके उपचार हेतु उचित प्रक्रिया अपनाने से है । सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि अपशिष्ट प्रबन्धन का एक मात्र अर्थ अपशिष्ट को एक मूल्यवान संसाधन रूप में बदलने और उसका उपयोग करने से है ।

अपशिष्ट प्रबन्धन की विधियाँः–

लैंडफिलः– यह वर्ततान मे अपशिष्ट प्रबंधन हेतु प्रयोग होने वाली सबसे प्रचलित विधि है। इस विधि मे शहरों के आसपास के खाली स्थानों में अपशिष्ट को एकमित्र किया जाता है । ऐसा करते हुए यह ध्यान रखा जाता है कि वह क्षेत्र जहाँ अपशिष्ट एकत्रित किया जा रहा है, मिट्टी से ढका हो ताकि प्रदूषण से बचाव किया जा सके । जानकारों का मानना है कि यदि इस विधि को सहीं ढंग से ड़िजाइन किया जाए तो यह किफायजर साबित हो सकती है ।

इंसीनरेशनः– इस विधि में अपशिष्ट को उच्च तापमान पर तब तक जलालाया जाता है जब तक वह राख में न बदल जाए। अपशिष्ट प्रबंधन की विधि को व्यक्तिगत , नगरपालिका और संस्थानो के स्तर पर किया जा सकता है। इस विधि की सबसे अच्छी बात यह है कि यह अपशिष्ट की मात्रा को 20–30 प्रतिशत तक कम कर देता है। हालाँकि यह विधि अपेक्षाकृत काफी महँगी मानी जाती है ।

यरोलिसिसः– अपशिष्ट प्रबंधन की इस विधि के अंतर्गत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की इस विधि के अंतर्गत ठोस अपशिष्ट को ऑक्सीजन की उपस्थिति के बिना रासायनिक रूप् से विघटित किया जाता है ।

अपशिष्ट प्रबंधन संबंधी चुनौतियाँ– शहरीकरण मे तीव्रता के साथ ही ठोस अपशिष्ट उत्पादन में भी वृद्धि हुई है जिसने ठोस अपशिष्ट को काफी हद तक बाधित किया है।, भारत मे अधिकांष शहरी स्थानीय निकाय वित्त, बुनियादी ढाँचे और प्रौद्योगिकी की कमी के कारण कुशल अपशिष्ट प्रबंधन सेवाएँ प्रदान करने के लिये संघर्ष करते हैं।, अधिकांश नगरपालिकाएँ बिना किसी विशेष उपचार के ही ठोस अपशिष्ट को खुले डंप स्थलों पर एकत्रित करती हैं।, अक्सर इस प्रकार के स्थलों से काफी बड़े पैमाने पर रोगों के जीवाणु पैदा होते है और आस–पास रहने वाले रोग भी इससे काफी प्रभावित होते है। इस प्रकार के स्थलों से जो दूषित रसायन भूजल में मिलता है वह आम लोगों के जन–जीवन को काफी नुकसान पहुँचाता है।, कई विशेषज्ञ इन स्थलों को वायु प्रदूषण के लिये भी जिम्मेदार मानते है।, एक अन्य समस्या यह है कि अपशिष्ट प्रबंधन के लिये वित्त आवंटित किया जाता है उसका अधिकांश हिस्सा और परिवार के लिए है।, अधिकांश नगरपालिकाएँ बिना किसी विशेष उपचार के ही ठोस अपशिष्ट को खुले डंप स्थलों पर एकत्रित करती हैं। अक्सर इस प्रकार के स्थलों से काफी बड़े पैमाने पर रोगों के जीवाणु पैदा होते हैं और आस–पास रहने वाले रोग भी इससे काफी प्रभावित होते हैं। इस प्रकार स्थलों से जो दूषित रसायन भूजल मे मिलता है वह आम लोगों के जन–जीवन को काफी नुकसान पहुँचाता है।, कई विशेषज्ञ इन स्थलों को वायु प्रदूषण के लिये भी जिम्मेदार मानते हैं।, एक अन्य समस्या यह है कि अपशिष्ट प्रबंधन के लिये वित्त आवंटित किया जाता है। अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली को सुदृढ़ करने के लिये अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। नीति निर्माण के समय हमारा ध्यान और अधिक लैंडफिल के निर्माण के बजाय पुनर्चक्रण तथा पुनर्प्राप्ति पर होना चाहिए।

आगे की राह

देश को एक व्यापक अपशिष्ट प्रबंधन नीति की आवश्यकता है जो विकेंद्रीकरण अपशिष्ट निपटान प्रथाओं की आवश्यकता पर बल देती है ताकि इस क्षेत्र में निजी प्रतिभागियों को हिस्सा लेने का प्रोत्साहन मिल सके। अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र में सुधार के लिये नागरिकों की भागीदारी और साहभागिता की महत्ता से इनकार नही किया जा सकता है। देश में लोगों को अपशिष्ट निस्तारण के प्रति जागरुक व शिक्षित करने के प्रयास किये जाने चाहिये, क्योंकि समाज में परिवर्तन लाने के लिये आवश्यक है कि लोगों की मानसिकता में परिवर्तन लाया जाए। अपशिष्ट प्रबंधन भारत में बहुत बड़ी समस्या का रूप ले चुका है क्योंकि शहरीकरण, औद्योगिकरण और आर्थिक विकास के परिणाम स्वरूप शहरी कूड़े–करकट की मात्रा बहुत बढ़ गई है। बेतहाशा बढ़ती जनसंख्या और लोगों के जीवन स्तर में सुधार से यह समस्या और भी जटिल हुई है। देश में ठोस कूड़े–करकट का समुचित निस्तारण सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (प्रंबधन और निपटान) नियमावली, 2000 और पुनर्गठित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2000 अधिसूचित किए है । देश के विभिन्न भागों में इस दिशा में पहल की जा रही है लेकिन ठोस अपशिष्ट प्रबंधन से सम्बन्धित मसलों के व्यापक समाधान के लिए अब भी बहुत–कुछ किया जाना बाकी है । इस लेख में देश में कारगर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए आवश्यक कानूनी ढाँचे, इसके महत्वपूर्ण घटकों और इसकी स्थिति, अब तक उठाए गए कदमों तथा चुनौतियों और आगं के रास्ते की चर्चा की गई है ।

जलपान गृह में खाओ सब के भाग्य का

(व्यंग्य)

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश

जलपान ग्रह की स्थापना देश की खूंखार कैदियों को एक किस्म का दंड देने के लिए बनाई गई थी। ७२ कैदियों को जेल में भूखा रखा जाता था रोजाना ७ आदमियों का ही भोजन वहां पर रखा जाता था एक टेबल पर। फिर होने लगती थी खाने के नाम पर मुक्का–मुक्की! कोई इधर से जंप मारता था, कोई उधर से जंप मारता था, कोई किसी की बनियान पकड़ कर खींच लेता था तो कोई किसी की चड्डी पकड़ के! इसी प्रकार हमारे इंडिया में जलपान गृह इसी प्रकार का हो गया है। यदि किसी जान पहचान वालों से कोई पुरानी रंजिश निकालनी हो, उन्हें किसी बहाने जलपान गृह पर आमंत्रित किया जाता है और फिर जलपान देखकर लोग ललचाई जीभ लेकर जंप मानने लगते है। सफल खींचातानी में जंप का अभ्यास होना चाहिए और उसे शार्ट जंपर भी आनी चाहिए, वर्ना खाने की रेस में सबसे पीछे रह जाएंगे, ऐसा ना हो कि पूरा खाना खत्म हो जाए! बस किसी को जरूरत से ज्यादा ना मिल जाए, इसके लिए खींचातानी होनी चाहिए। जलपान गृह में फुटबॉल के खिलाड़ियों सा जंप लगाना आना चाहिए, जो तमाम बाधाओं को चीर कर मंजिल पर पहुंच जाएं और वहां पहुंच कर मिठाईयां अपने सहयोगियों को पास करें। विश्व फुटबॉल की रेंज टीम जोरदार क्यों है? इसलिए कि वहां जलपान व्यवस्था सहज रूप से समाज में खुली हुई है जो मिल जाए वही खा लो, जो अपने हिस्से आए वही खाओ! खाने के इस भारतीय भावना ने बड़ा आहत किया है। जलपान व्यवस्था हमें सिखाती है अगर होता है तो सबके हिस्से का खा जाओ। सब खा जाओ जितना हो सके! एक सफल जलपान का लाभ वही व्यक्ति ले सकता है जो दूरदर्शी हो और जो मुआयना कर सके कि कायदे से आइटम कहां रखे हैं। हर टेबल के पास से मोबाइल ना करने के चक्कर में, ही अगर बंदा लग गया तो मौका चूकने का खतरा रहता है। एक सफल भुखमरा आत्मविश्वासी होना चाहिए। शुरुआत में कई जलपान गृह का दृश्य देखकर ही हतोत्साहित हो जाते हैं। यह बुजदिलो के लिए नहीं है। कई बार खाने की टेबल की ओर जाकर वहां से वापस ठेल दिए जाने पर कई बंदे यह सोचकर मन बनाते हैं कि कर्म पर ही हमारा अधिकार है, सो किया! हे भूखे हंसराज, भोजन के इच्छुक! तेरा अधिकार खाने के लिए सिर्फ खेलम खेल करने के लिए ही है उसके पहले तुझे भोजन मिल ही जाएगा यह आवश्यक नहीं है! तू सारा ध्यान खेलम खेल पर लगा भोजन तेरे हाथ में नहीं है! वह तो उनके हाथ में है जो टेबल के आगे डटे हुए हैं। एक बार एक कवि महोदय भोजन करने गए जलपान गृह में तो उन्होंने पाया कि बढ़िया आइटम वाली सारी टेबल पर भारी मार मच रही है। सिर्फ वह टेबल पब्लिक में थे, जहां कुछ रूखी सूखी रोटियां पड़ी हुई है। तभी महोदय ने उन्हीं में से काम चलाया और अपनी तरह के अन्य खाने वालों को संदेश दिया कि दूसरों की प्लेट में रसमलाई देख कर मन को मत ललचाये, रूखी सूखी खाकर ठंडा पानी पीकर घर आइए। अगर विक्रम बेताल की कथा लिखी जाती तो एक कथा के अंत में बेताल विक्रम से सवाल पूछता, षविक्रम बता! वह भला मानुस सूट टाई लगाकर बीवी बच्चों के साथ वहां भोजन करने गया, भोजन के लिए उसे बकायदा निमंत्रण था फिर भी वह याचक दृष्टि से भोजन को देखता ही रह गया, फिर वो घर पर भूखा क्यों लौट आया? इस प्रश्न का उत्तर तूने नहीं दिया तो तेरे सिर के सौ टुकड़े हो जाएंगे! विक्रम इसका जवाब यह देता कि है 'बेताल मेरे सिर के सौ टुकड़े होने से मुझे जितनी व्यथा होगी, उससे ज्यादा व्यथा उस बाबू को उस एकमात्र सूट के चौपट हो जाने पर होती है। जो वो उस जलपान गृह में पहन कर गया था। जलपान गृह में भोजन के लिए सूट टाई के सुरक्षित रहने का मोह छोड़ना पड़ता है, इसलिए वह याचक दृष्टि से भोजन को देखकर घर वापस लौट आया।' संपूर्ण व्यक्तित्व के लिए आवश्यक चौसठवी कलाओं में यह पैंसठवी कला भी जोड़ देनी चाहिए जलपान भक्षण! वैसे जलपान गृह में जनता की सहूलियत के लिए कुछ परिवर्तन किए जाने चाहिए, जैसे जलपान गृह पर घुसते ही फुटबॉल खिलाड़ियों की तरह एक बुके ड्रेस थमा दी जानी चाहिए, पर इसमें महिलाएं ऐसे किसी भी प्रस्ताव का भारी विरोध करेंगी! निःसंदेह वह पुरुष किसी फंक्शन में सिर्फ खाने के लिए जाते हो, पर महिलायें इतनी सीमित सोच से काम नहीं करती वह कई प्रकार के उद्देश्य लेकर किसी फंक्शन में जाती है। भूखी महिलाओं के सामने गंभीर सवाल है कि, वह किस प्रकार फुटबॉल ड्रेस में भी ज्वेलरी प्रदर्शन का उद्देश्य पूरा करे।ड्रेस डिजाइनरों, चौलेंज को स्वीकारो और ऐसी फुटबाली जलपान व्यवस्था बनाकर दिखाओ जिसमें हर किस्म की ज्वेलरी झमाझम दिखाई दे सके।

मंजिल

बेवफाओ के शहर में,
वफा की उम्मीद लगा बैठे हैं।
जिंदगी से थोड़ी खुशी,
उधार मांग बैठे हैं।
दुनिया में आए थे जीने के लिए।
मायूसी का आलम यहां बहुत है।

चिलचिलाती धूप है।
डगर भी है बहुत कटीला।
पैरों में हैं छाले,
मंजिल का भी नहीं पता।
तूफाँ बहुत है,
कश्ती में भी है पैबंद।
कश्ती किनारे लगा दे।
वो मौजें अब कहां हैं।

टूटती है जब हिम्मत,
आंखों से बहते हैं अविरल धारा।
थर थरा जाती है जब जिंदगी।
अंधेरों का होता है जब गहन पहरा।
कोई एक आस का दिया जला दे।
वो आसरा अब कहां है।

हँसी होठों पर रहे बरकरार,
कोशिश बहुत किया मैंने।
बवंडर से चक्रव्यूह में,
मैं अकेला खड़ा हूँ।
जो चक्रव्यूह को भेद सके,
वो अभिमन्यु अब कहां है।

दिल का दर्द समझने वाले,
अब मुसाफिर कहां है।
अपनी जान लुटा दे,
ऐसा अब इश्क कहां है।
रंग बदलती इस दुनिया में,
वफाओं का सिलसिला अब कहां है।

उससे कहा मैंने फरियादी बनकर।
मेरी मां का आंचल मुझे वापस लौटा दे।
उसके जैसा छांव अब मिलता कहां है।
ए जिंदगी थोड़ी सी खुशी,
मुझे भी उधार दे दे।

चार कंधों पर जनाजे को जाते देखा।
राम नाम सत्य की गूंज थी,
निरुशब्द था वह लेटा मौन।
यही आखिरी सफर था उसका।
शायद यही शुकुन की मंजिल भी।

राजश्री सिन्हा
सोफिया (बुल्गारिया)

सुहाग की चूड़ी

मीरा जैन
उज्जैन

मंगलू शाम को जब अपने झोपड़ीनुमा घर पर लौटा तो सामने रखे डिब्बे के ऊपर रखी एक चूड़ी देख चौक गया तुरंत ही आवेश पूर्ण शब्दों मे चीखा–'बुधरी ! ये चूड़ी कहाँ से आयी ?' बुधरी ने सहमी आवाज मे जवाब दिया–मैने इसे खरीदी है, कितने रूपये मे ?, पचास रूपये मे, पचास रूपये का नाम सुनते ही मंगलू का पारा साँतवें आसमान पर चढ़ गया –मै तुझे समझदार समझता था इतनी गंवार और लोगों के बहकावे मे आने वाली निकलेगी ये मैने सपने मे भी नहीं सोचा था जाओ उस रुकमणी को चूड़ी इसी वक्त वापिस कर आओ, 'तुम्हें कैसे पता कि यह चूड़ी मैने रुकमणी से ही खरीदी है?' 'आज सेठानी जी को कहते सुना कि उसने 500 मे सुहाग की चूड़ी औरतों का कुछ भी नहीं, ठगने लोग क्या नहीं करते जवाब से मंगलू रुकमणी की प्रशंसा ! मैने ये पचास रूपये लिए जोड़े थे लेकिन जब सुना कि रुकमणी सुहाग की चूड़ी एक एक सभी को दे रही है जिसकी जितनी इच्छा हो उतने ही रूपये दे। ये साधारण चूड़ी नहीं है समझे, ये पिछले वर्ष ब्याह कर आई उस रज्जो की है जिसका पति सीमा पर देश की रक्षा करते हुए शहीद हो अमर हो गया। वह तो सारी चूडियां नदी मे विसर्जित करने जा रही थी तभी रुकमणी ने देख लिया और उससे चूडियां ले ली और चौराहे पर एक टोकनी रख बेचना प्रारम्भ कर दिया हाथों हाथ सारी चूड़ियां बिक गई और बदले मै आये सारे रूपये रज्जो को दे दिये।'

संतुलन बनाकर चलना

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

इतना सरल नहीं होता,
जग के साँचे में ढलना।
कर्तव्यों की डोरी पर,
संतुलन बनाकर चलना।
डोर किसी के हाथ सधी,
हम बने हुए कठपुतली।
नाच रहे ज्यों हम खुद हों,
मन बजा रहा है ढपली।

इन हालातों में लगता,
मुश्किल है स्वयं सँभलना।
संबंधों की हठी तुला,
संतुलित न है रह पाती।
पासंगों में स्वार्थ निहित,
हर तोल छलक ही जाती।

आहत हो उठता है मन,
जब की जाती है तुलना।
हालातों से लड़-भिड़कर,
हैं हाथ लगे जब घाटे।
उहापोह की स्थिति में,
ढोने होंगे सन्नाटे।
फिर भी उसका स्वागत है,
जो मुझसे चाहे मिलना।

रेखा शाह आरबी
बलिया यूपी

चुनावी मेढको की टर्रटराहट

अपने देश में जब–जब राज्यों के नगर निकाय चुनाव होते हैं चुनावी मेढको के टर्रटराहट का मौसम एक बार फिर आ जाता है। प्रचार गाड़ियों के द्वारा भांति भांति अनेक भांती के चुनावी टर्रटराहट सुनने को मिल जाती है। मेरे भैया भूल न जाना ..मेरी बहना भुल ना जाना ... अरे भूलने का मौका दोगे तब तो लोग भूल पाएंगे रात दिन अपने प्रचार गाड़ी के माध्यम से जनता को याद दिलाते रहते हैं इसलिए भूलने का... सवाल ही नहीं पैदा होता। बल्कि जनता को यह भी याद हो जाता है। फला निशान पर फला दिन तुम मोहर लगाना है। चुनाव प्रचार गाड़ियों द्वारा कान फोड़ गीतो से जनता का सुखचौन नींद हराम कर दिया जाता है। और तब तक किया जाता रहता है जब तक जनता अपना मत किसी को देखकर जान नहीं छुड़ा लेती। जनता के वोट देने की ताकत ही उसको परेशान करने का साधन बना दिया जाता है। जिस पर ना रोया जा सकता है ना चिल्लाया जा सकता है बस कान में रुई डाल कर बर्दाश्त किया जा सकता है इसके अलावा जनता के सामने कोई चारा भी नहीं रहता। और जिन लोगों को दोपहर में बहुत मीठी मीठी नींद लेने की आदत रहती है वह अपनी आदत कुछ समय के लिए छोड़ना ही बेहतर रहता है क्योंकि यदि आप खुद नहीं छोड़ेंगे तो चुनावी टर्रटराहट अपने शोरगुल से आप की आदत छुड़ा देगी।

ऐसे तो यह वक्त हर पांच साल में आता ही रहता है और हर बार इसे नयी टर्रटराहट

नवीन अद्वितीय बताया जाता है और अद्भुत तरीके से इसको नवनवीन कलेवर फ्लेवर में जनता के सामने पेश किया जाता है कि इसमें कुछ भी पुराना शेष नहीं है। एकदम नया प्रोडक्ट लाए हैं लेकिन वही टर्रटराहट वही बगावत वही अदावत ... मेंढक वही रहते हैं। नए–नए पैदा होने वाले मेंढक अपनी एंट्री के लिए खूब छटपटाते तड़पते हैं लेकिन उनको प्रवेश नहीं देने के मुद्दे पर सारे पुराने मेंढक एक हो जाते हैं अतः बेचारे नए मेंढक मन मार कर रह जाते हैं।

पूरे पांच साल धरती के नीचे कुंभकरणी नींद सोए रहकर अन्य सभी जन कार्यों की उपेक्षा करते हैं। लेकिन चुनावी मौसम आते ही यह फुदक फुदक कर धरती फाड़ कर बाहर निकल आते हैं जनता देखकर इनको हक्की बक्की हुई जाती है और जनता के सामने जाने से पहले अपनी पुरानी केचुली उतार देते हैं या उतारने का भरपूर प्रयास करते हैं ।ताकि उनके पास बताने के लिए यह रहे कि हम अब बिल्कुल नए नवेले हैं । जो पिछली बार गाना गाया था। इस बार हमारा हृदय परिवर्तन हो चुका है हम पूर्णत जनधन हो चुके हैं उसी गाने को तोड़ मरोड़ कर फिर से अपना टेप रिकॉर्डर बजा देते हैं। एक वोट देने का अधिकार जीव का जंजाल बन जाता है एक को दिया तो दूसरा मुंह फुला कर बैठ जाता है दूसरे को दिया तो तीसरा मुंह फुला कर बैठ जाता है। रिश्तेदारी नातेदारी बिगाड़ने में चुनाव भी शकुनी की भूमिका निभाता है कम से कम जनता को पाच – छ वोट देने का अधिकार तो रहना ही चाहिए। ताकि सभी रिश्तेदारी और नातेदारी निभा सके।

सीबीएसई परीक्षा में शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ के बच्चों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

हाईस्कूल का 99.3 और इंटर का 98 प्रतिशत ओवरआल परिणाम

लोक पहल

शाहजहांपुर। सीबीएसई परीक्षा परिणाम में श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्र छात्राओं ने बेहतर प्रदर्शन कर विद्यालय का रोशन किया है ।विद्यालय का कक्षा 10 का ओवरऑल रिजल्ट 99.3 प्रतिशत रहा व कक्षा 12 का ओवरऑल रिजल्ट 98 प्रतिशतरहा।

कक्षा 10 में रौनक चौधरी 96.4 फीसदी अंक हासिल कर विद्यालय में टाप किया है। अरुणिमा अग्रवाल 96.2 फीसद अंक के साथ द्वितीय स्थान पर व 95.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर आस्था कटियार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्र विवेक गुप्ता व सुहाना गुप्ता ने सोशल साइंस विषय में अधिकतम 100 अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। कक्षा 12 में 96.4 प्रतिशत अंक के साथ कॉमर्स के सिद्धांत तिवारी ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। साइंस वर्ग की सिद्धिका अग्रवाल ने 96.2 फीसदी अंक के साथ द्वितीय स्थान पर रही। साइंस के ही अनमोल आनंद 92.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में तृतीय स्थान हासिल किया। विद्यालय के सचिव अशोक अग्रवाल व प्रधानाचार्या डा. संध्या ने समस्त छात्र छात्राओं को अच्छे परिणाम की बधाई दी व उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

डीएम और एसपी ने किया मतदान केन्द्रों का निरीक्षण

लोक पहल

शाहजहांपुर। निकाय चुनाव के दूसरे चरण में शाहजहांपुर जनपद में सम्पन्न हुए मतदान का जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह, पुलिस अधीक्षक एस आनन्द ने भारी पुलिस बल व प्रशासनिक अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया। इस दौरान जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने नगर के साथ–साथ अन्य निकायों के बूथों का निरीक्षण कर मतदाताओं से अधिक से अधिक संख्या में मतदान करने की अपील की। शांतिपूर्ण और निष्पक्ष मतदान सम्पन्न कराये जाने के लिए जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह व पुलिस अधीक्षक एस आनन्द ने कस्तूरबा आवासी विद्यालय किला, प्राथमिक विद्यालय चिनौर, प्राथमिक विद्यालय बाडूजई प्रथम, इस्लामियां इण्टर कालेज, कम्पोजिट विद्यालय मिला, एनटीआई इण्टर कालेज, प्रभा मांटेशरी स्कूल, सरस्वती शिशु मन्दिर, एजेड खान इण्टर कालेज, प्राथमिक विद्यालय लालपुर, पशु चिकित्सालय आदि मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान पुलिस अधीक्षक एस आनन्द ने पुलिसकर्मियों को शांतिपूर्ण निष्पक्ष मतदान कराये जाने के निर्देश भी दिये।

सीबीएसई परीक्षा में इण्टर में छात्राओं ने तो हाईस्कूल में छात्रों ने मारी बाजी

कई विद्यालयों का शत–प्रतिशत रहा परीक्षा परिणाम

लोक पहल

शाहजहांपुर। जनपद में सीबीएसई परीक्षा परिणाम में छात्र–छात्राओं का दबदबा बरकरार रहा। कक्षा 12 में जहां छात्राओं ने बाजी मारी तो कक्षा 10 में छात्र छात्राओं पर भारी पड़े। जनपद में कुल 41 विद्यालयों में सीबीएसई की परीक्षा कराई गई थी। घोषित परिणाम में कक्षा 10 की टॉप 10 की सूची में 16 छात्रों ने अपनी जगह बनाई वहीं बारहवीं की टाप 10 की सूची में 13 छात्राओं ने स्थान हासिल किया। यहां केवल 4 छात्र ही अपनी जगह बना पाये। रेयान इंटरनेशनल स्कूल का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। यहां माही गुप्ता ने 97.40, अनन्या अग्रवाल ने 97.20 व शाहिल अग्रवाल ने 95.08 अंक हासिल कर स्कूल का नाम रोशन किया। तक्षशिला पब्लिक स्कूल में शगुन सचदेवा ने 97 प्रतिशत, कीर्ति सेठ ने 95.08 प्रतिशत व अंशिका रस्तोगी ने 96.04 प्रतिशत अंक हासिल किये। सेन्ट पाल स्कूल का बारहवी का रिजल्ट भी शत प्रतिशत रहा। सीबीएसई बोर्ड में इण्टरमीडिएट में कुल 2717 छात्र–छात्राओं ने परीक्षा दी थी वहीं हाईस्कूल में 3070 छात्र–छात्राएं परीक्षा में शामिल हुए थे। शहर में एसएसएमवी, तक्षशिला पब्लिक स्कूल, द रेंसा एकेडमी, माधव राव सिंधिया, केवी–1, केवी–2 आदि स्कूल परीक्षा केन्द्र बनाये गये थे जहां कुल 5787 छात्र–छात्राओं ने परीक्षा दी थी।

महाराणा प्रताप जयंती पर क्षत्रिय समाज ने किया नमन

लोक पहल

शाहजहांपुर। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के तत्वाधान में जिला कार्यालय पर महाराणा प्रताप जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभी क्षत्रिय बंधुओ ने महाराणा प्रताप के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के जिलाध्यक्ष पदम सिंह ने कहा कि हम सबको महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके बताए मार्ग पर चल कर उनका अनुसरण करना चाहिए। जिला महामंत्री मुनीश सिंह परिहार ने क्षत्रिय समाज के युवाओं का आवाहन करते हुए कहा कि क्षत्रिय समाज के युवा राष्ट्र सेवा की भावना को लेकर आगे बढ़े।

क्षत्रिय बंधुओं ने महाराणा प्रताप जयंती पर अवकाश घोषित किए जाने की जोरदार मांग की। इस मौके पर कोशलेंदर सिंह, उदय प्रताप सिंह, अमित सिंह, हनी सिंह, प्रीतम सिंह पुजारी, राज कुमार सिंह, संदीप सिंह, संजय सिंह, राम कुमार सिंह, विजय सिंह, दीप सिंह, विजय सिंह ,उपेंद्र सिंह, राज सिंह चौहान, लोकेंद्र सिंह, अजय सिंह, रणविजय सिंह, विजय सिंह प्रताप, राजभान सिंह, आदि लोग उपस्थित रहे।

पुवायॉ में भाजपा प्रत्याशी संजय गुप्ता ने बनाई जीत की हैट्रिक

लोक पहल

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर जिले की पुवायां नगर पालिका परिषद सीट पर भाजपा प्रत्याशी संजय गुप्ता ने लगातार तीसरी बार जीत हासिल कर हैट्रिक बनाई। उन्होंने अपना निकटतम प्रतिद्वंदी समाजवादी पार्टी के समर्थित उम्मीदवार गोपाल अग्निहोत्री को 4854 मतों से पराजित कर दिया। संजय गुप्ता को कुल 9300 वोट हासिल हुए जबकि गोपाल अग्निहोत्री को 4854 मत ही मिल सके।

संजय गुप्ता सबसे पहले वर्ष 2012 में निर्दलीय के रूप में चुनाव जीत कर चेयरमैन बने थे। वर्ष 2017 में भी वह निर्दलीय चुना लड़े और भाजपा के डॉ. सुधीर गुप्ता को हराया था। इस बार वह भाजपा की टिकट से चुनाव लड़े और तीसरी बार जीत दर्ज की।

नगर पालिका से कांग्रेस प्रत्याशी कमलकांत को 113, बसपा प्रत्याशी विजयप्रताप को 410, निर्दलीय गौरव मिश्रा को 110, विकास गुप्ता को 271, नीति गुप्ता को 27, अमित को 57, ममता को 76, पवन कुमार को 412 और गंगाराम मिश्रा को 173 वोट मिले हैं। 25 लोगों ने नोटा को भी पसंद किया है। पुवायॉ में भाजपा में टिकट को लेकर काफी खींचतान थी पार्टी में अध्यक्ष पद को लेकर तमाम नेता अपनी दावेदारी ठोंक रहे थे लेकिन पार्टी ने यहां निवर्तमान चेयरमैन संजय गुप्ता पर ही अपना विश्वास जताकर उन्हें मैदान में उतारा। संजय गुप्ता को टिकट मिलने के बाद पार्टी में बगावत हो गई और भाजपा किसान मोर्चा के पूर्व अध्यक्ष गंगाराम मिश्रा ने निर्दलीय पर्चा दाखिल कर दिया लेकिन मतदान से पूर्व ब्राहम्ण समाज के आवाहन पर गंगाराम मिश्रा ने सपा समर्थित गोपाल अग्निहोत्री को समर्थन दिये जाने की घोषणा कर दी। माना जा रहा था कि इससे भाजपा प्रत्याशी संजय गुप्ता की राह मुश्किल हो सकती है लेकिन आखिरकार में कैबिनेट मंत्री सुरेश कुमार खन्ना, जितिन प्रसाद, सांसद मिथिलेश कुमार व एमएलसी सुधीर गुप्ता ने कमान अपने हाथ में लेकर डेमेज कंट्रोल करना शुरू किया और अंततः भाजपा प्रत्याशी संजय गुप्ता ने बड़ी जीत हासिल कर यहां पर जीत की हैट्रिक बनाई है।

जलालाबाद में पहली बार बना सपा का चेयरमैन

सपा के शकील अहमद ने निर्दलीय मुनेन्द्र गुप्ता को मात्र 24 वोट से हराया

लोक पहल

जलालाबाद। जलालाबाद में पहली बार समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी शकील अहमद ने जीतकर पार्टी का परचम फहराया है। पिछले कई चुनावों से समाजवादी पार्टी को यहां चेयरमैन पद पर हार का सामना करना पड़ रहा है। यह पहला मौका है कि जब सपा ने यहां जीत हासिल की है। साथ ही करीब आधी शताब्दी बीत जाने के बाद कोई मुस्लिम जलालाबाद नगर पालिका अध्यक्ष पद पर काबिज हुआ है। यहां पर भी भाजपा में बगावत के सुर सुनाई दिये। भाजपा ने यहां निवर्तमान चेयरमैन मुनेन्द्र गुप्ता का टिकट काटकर मनमोहन द्विवेदी को अपना प्रत्याशी बनाया था। इससे नाराज होकर मनेन्द्र गुप्ता ने पार्टी से बगावत कर निर्दलीय चुनाव मैदान में उतरने का फैसला किया। उनका यह फैसला रंग लाता भी दिखाई दिया। मतगणता के दौरान अन्तिम राउंड तक एक–एक वोट के लिए लड़ाई होती रही। अंत में सपा प्रत्याशी शकील अहमद को 24 वोट से विजयी घोषित किया गया। यहां पर सपा प्रत्याशी शकील अहमद को 6045 मत हासिल हुए। जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वंदी निर्दलीय मुनेन्द्र गुप्ता को 6021 वोट मिले। इस तरह सपा प्रत्याशी ने मात्र 24 वोटों से जीत हासिल की। जबकि भाजपा प्रत्याशी मनमोहन द्विवेदी को 4343 और निर्दलीय संजय पाठक को 1739 मत मिले।

तिलहर में एक बार फिर समाजवादी पार्टी का कब्जा

लगातार दूसरी बार चेयरमैन बनी हाजरा बेगम

लोक पहल

शाहजहांपुर। तिलहर नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद पर हुए चुनाव में समाजवादी पार्टी ने जीत का परचम फहराया। सपा प्रत्याशी हाजरा बेगम ने भाजपा की प्रत्याशी निर्मला गुप्ता को 4,842 वोटों से हरा दिया।

2017 के नगर पालिका चुनाव में सपा की हाजरा बेगम के सामने भाजपा ने राजीव राठौर को उतारा था। तब हाजरा बेगम ने भाजपा प्रत्याशी को 2,464 वोटों से मात दी थी। 24 साल से यहां पर सपा की जीत हो रही है। हाजरा बेगम ने एकतरफा मुकाबले में भाजपा की निर्मला गुप्ता को 4842 वोटों से हरा दिया।

सपा प्रत्याशी हाजरा बेगम को 15,767 वोट मिले जबकि भाजपा प्रत्याशी निर्मला गुप्ता 10,925 वोट ही पा सकीं। यहां पर कांग्रेस प्रत्याशी चांद मियां 1896 मत पा सके। निर्दलीय प्रत्याशी सायरा को 683 वोट मिले हैं।

हर साल 44 हजार करोड़ का पान-मसाला खाकर थूक देते हैं भारतीय

पान–मसाले पर टैक्स चोरी में यूपी, दिल्ली और महाराष्ट्र टॉप पर

लोक पहल

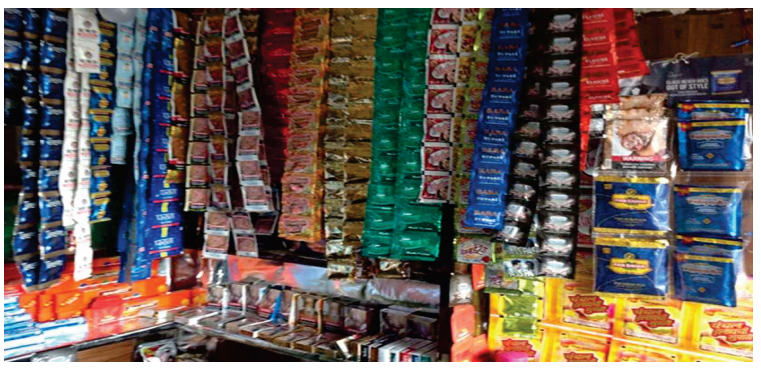

लखनऊ। पान मसाला और तंबाकू प्रेमियों की संख्या दिन–ब–दिन बढ़ रही है। इंटरनेशनल मार्केट एनालिसिस रिसर्च एंड कंसलटिंग ग्रुप (आईमार्क) के मुताबिक भारत में पान मसाला बाजार वर्ष 2022 में 43410 करोड़ रुपये का था। जो वर्ष 2028 तक बढ़कर 53678 करोड़ रुपये का हो जाएगा। मसाला–तंबाकू खाने वाले लोग हर साल चार फीसदी की रफ्तार से बढ़ रहे हैं। जांच एजेंसियों के मुताबिक अकेले इसी सेक्टर में हर साल 14 हजार करोड़ की टैक्स चोरी की जा रही है।

जानकारी के मुताबिक 140 करोड़ की आबादी में हर साल 140 अरब पान मसाले और तंबाकू की पुड़िया खप रही है। खास बात ये है कि न तो इसमें गांव–कस्बों में बिकने वाले स्थानीय ब्रांड शामिल हैं और न ही चोरी से चल रही पान मसाला मशीनों से निकलने वाले माल को इसमें जोड़ा गया है।

इन 140 अरब पुड़िया में 95 अरब मसाले और 45 अरब तंबाकू की हिस्सेदारी है। उन्होंने चिंता जताते हुए बताया कि तंबाकू के मुकाबले सादे पान मसाले की मांग 11 फीसदी बढ़ी है। यानी युवा पीढ़ी में मसाले की लत बढ़ी है। मसाला सेक्टर में कर चोरी के खेल में दिल्ली, यूपी और महाराष्ट्र सबसे ऊपर हैं। उनके बाद गुजरात का नंबर आता है। जांच एजेंसी के मुताबिक 3100 करोड़ की कर चोरी अकेले यूपी में हो रही है। मशीनों की स्पीड 700 से बढ़कर 2500 पाउच प्रति मिनट पहुंच गई है। जांच विंग का कहना है कि रफ्तार की निगरानी कर पाना बेहद मुश्किल है। पान मसाला में भंडारण नहीं किया जाता बल्कि लगातार माल निकलता रहता है। फैक्टरी से बाहर निकलने के बाद जल्द से जल्द ठेलों व गुमटियों में पहुंच जाता है। यही वजह है कि छापों और जांच में मौके पर मिले माल पर कर चोरी का आंकलन किया जाता है। किसी एक इकाई की जांच भी बार–बार नहीं की जा सकती।

पीएमश्री योजना में उच्चीकृत होंगे प्रदेश के 928 विद्यालय

लोक पहल

लखनऊ। बेसिक व माध्यमिक शिक्षा के 928 विद्यालय पीएमश्री योजना के पहले चरण के तहत उच्चीकृत होंगे। जल्द ही इसके लिए बजट जारी होगा।

केंद्र सरकार की ओर से नए वित्तीय वर्ष में प्रदेश के 1275 विद्यालयों के पीएमश्री योजना में उच्चीकरण को हरी झंडी दी गई थी। इसी क्रम में राज्य परियोजना निदेशक विजय किरन आनंद ने सभी बीएसए से कहा कि पहले चरण में उच्चीकृत किया विद्यालयों में 842 बेसिक और 86 माध्यमिक शिक्षा विभाग के हैं।

इसके लिए बच्चों को ट्रैक कर विद्यालय में नामांकित करने के लिए 10 रुपये प्रति बच्चे के अनुसार बजट प्रस्तावित किया गया है। विभाग इसके अनुसार प्रस्ताव तैयार कर पोर्टल पर फीड करें।

सुधरेगा भविष्य, काशी विद्यापीठ में खुलेगा देश का पहला ट्रांसजेंडर सेल

लोक पहल

वाराणसी। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में देश का पहला ट्रांसजेंडर सेल खुलने जा रहा है। यह सेल ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों के अधिकार व सामाजिक न्याय के लिए काम करेगा। कुलाधिपति व राज्यपाल आनंदी बेन पटेल की पहल पर वर्तमान सत्र से इसकी शुरुआत होगी। काशी विद्यापीठ में अब ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों को शैक्षणिक माहौल के साथ ही सामाजिक जीवन में आने वाली समस्याओं से निजात मिलेगी। वाराणसी, चंदौली, मिर्जापुर, भदोही और सोनभद्र के संबद्ध 350 महाविद्यालयों में भी सेल की शाखाएं खोली जाएंगी। ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों के कॅरियर और विकास के लिए सेल योजनाएं भी तैयार करेगा। नई शिक्षा नीति के तहत स्किल डेवलपमेंट के साथ ही उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक होगा। पिछले साल विश्वविद्यालय में दो ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों ने दाखिले के लिए आवेदन किया था। पहले छात्र प्राइवेट परीक्षा में शामिल होते थे।

ट्रांसजेंडर विद्यार्थी सामाजिक भय व शोषण के डर से अपनी पहचान छिपा कर रखते हैं। वर्तमान में लगभग 15 ट्रांसजेंडर विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। सामाजिक न्याय पर काम करना चाहते हैं तो जेंडर न्याय सबसे बड़ा मुद्दा है। जब सामाजिक न्याय की बात आती है तो हम दलित और आदिवासी पर बात करते हैं, लेकिन ट्रांसजेंडर पर कोई बात नहीं होती है। सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए जेंडर न्याय बहुत जरूरी है।

सरकार की लापरवाही से तीन सौ एमबीबीएस छात्रों का भविष्य खतरे में

■ पांच साल पढ़ाई के बाद भी डिग्री को नहीं मिली मान्यता

लोक पहल

लखनऊ। सरकार की लापरवाही के चलते तीन सौ एमबीबीएस छात्रों का भविष्य दांव पर लग गया है। यह छात्र पांच साल की पढ़ाई के बाद सड़क पर हैं। उनकी डिग्री को मान्यता नहीं मिल पाई है। ऐसे में वे न तो नीट पीजी दे सकते हैं और न ही किसी मरीज का इलाज कर सकते हैं लिहाजा कॉलेज से लेकर महानिदेशालय तक चक्कर काट रहे हैं।

राजकीय मेडिकल कॉलेज एंड सुपर स्पेशियलिटी आजमगढ़, शेख उलहिंद मौलाना महमूद हसन मेडिकल कॉलेज सहारनपुर व रानी दुर्गावती राजकीय मेडिकल कॉलेज बांदा में 2017 बैच में 100–100 छात्रों ने दाखिला लिया। चार साल पढ़ाई व एक साल इंटर्नशिप की, लेकिन डिग्री की बारी आई तो पता चला कि इन कॉलेजों को 2017 बैच के लिए राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग ने सशर्त मान्यता दी थी। शर्तें पूरी न करने से इन्हें नियमित मान्यता नहीं दी गई है। ऐसे में इनका उप्र. मेडिकल फैकल्टी में पंजीयन नहीं हो सकता है।

ये छात्र अब खुद को ठगा महसूस कर रहे हैं, क्योंकि दाखिला लेने के बाद उन्हें उम्मीद थी कि 5 साल कोर्स पूरा करते ही इनका कॅरियर बन जाएगा। कुछ छात्र परास्नातक में दाखिला लेना चाहते थे तो कुछ प्रांतीय चिकित्सा सेवा संवर्ग के तहत सरकारी अस्पताल में सेवा का सपना संजोए थे। पर अब ये छात्र निरंतर भागदौड़ कर रहे हैं। यह देख महानिदेशालय में नए सिरे से मान्यता संबंधी पत्रावलियों की पड़ताल शुरू की गई है।

इन कॉलेजों में 2018 बैच की भी इंटर्नशिप चल रही है। ये छात्र करीब छह माह बाद पास होकर निकलेंगे। इनके भी पंजीयन पर संकट है। यदि समय रहते इन पर फैसला नहीं हुआ तो 300 अन्य छात्रों को पंजीयन के लिए इंतजार करना पड़ेगा। चिकित्सा शिक्षा एवं प्रशिक्षण महानिदेशक (डीजीएमई), किंजल सिंह ने बताया कि प्रदेश के 300 एमबीबीएस छात्रों के पंजीयन में आ रही समस्या और मान्यता में कहां चूक हुई, इसकी पड़ताल कराई जा रही है। किसकी गलती से मान्यता फंसी रही, इस पर भी शासन को रिपोर्ट भेजी जाएगी। जल्द छात्रों की समस्या का समाधान कराने का प्रयास किया जा रहा है।

43 साल बाद सामने आ सकता है मुरादाबाद दंगों का सच

1980 में ईद की नमाज के बाद भड़का था दंगा

लोक पहल

लखनऊ। 15 मुख्यमंत्री बदले और कई सरकारें लेकिन 1980 में ईद के दिन मुरादाबाद में हुए दंगो का सच आज तक लोगों के सामने नहीं आ सका। प्रदेश की योगी सरकार ने अब इन दंगो का सच सामने लाने के लिए आयोग की रिपोर्ट सदन में रखने का निर्णय लिया है। बता दें कि 43 साल पहले मुरादाबाद जिले में ईद की नमाज के बाद दंगे भड़क उठे थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में कैबिनेट ने मुरादाबाद दंगे की एक सदस्यीय न्यायिक जांच की रिपोर्ट को सदन के पटल पर रखने के प्रस्ताव को मंजूरी दी।

हैरानी की बात यह है कि 1980 से लेकर 2017 के दरम्यान किसी भी दल की सरकार इस रिपोर्ट को सार्वजनिक करने की हिम्मत नहीं जुटा सकी। प्रदेश सरकार के संसदीय कार्यमंत्री ने कहा कि जांच आयोग की रिपोर्ट गोपनीय है, उसे अभी सार्वजनिक नहीं किया जा सकता है। राज्य सरकार अब इस रिपोर्ट को सदन में रखेगी, जिसके बाद दंगे का पूरा सच सामने आ सकता है। बता दें कि तत्कालीन मुख्यमंत्री वीपी सिंह ने दंगे की जांच के लिए एक सदस्यीय न्यायिक जांच आयोग का गठन किया था। इस आयोग की रिपोर्ट को 40 साल बाद कैबिनेट में प्रस्तुत किया गया। कैबिनेट से अनुमोदन के बाद अब रिपोर्ट विधानमंडल में पेश की जाएगी। करीब 40 साल पहले शासन में रिपोर्ट प्रस्तुत होने के बाद भी पूर्ववर्ती सरकारों ने रिपोर्ट को कैबिनेट एवं सदन के पटल पर रखने की अनुमति नहीं दी। उल्लेखनीय है कि 1980 से अब तक प्रदेश में 15 मुख्यमंत्री बने, लेकिन कोई भी इस रिपोर्ट को सदन के पटल पर रखने की हिम्मत नहीं जुटा सका। मुरादाबाद में 13 अगस्त 1980 को ईद की नमाज के समय पथराव और हंगामा हुआ था। इसके बाद सांप्रदायिक हिंसा भड़कने से 83 लोग मारे गए थे और 112 लोग घायल हुए थे। मामले की जांच के लिए गठित आयोग ने अपनी रिपोर्ट 20 नवंबर 1983 को शासन को सौंपी थी।

अद्भुत होगा 2025 का महाकुंभ, करीब 40 करोड़ श्रद्धालुओं के आने की संभावना

लोक पहल

प्रयागराज। 2025 में संगम किनारे लगने वाले विश्व के सबसे बड़े मेला महाकुंभ की छआ इस बार अद्भुत होगी। इसके लिए अभी से तैयारियां शुरू हो गई है। एक ओर जहां मेले को सुविधाजनक और अविस्मणीय बनाने के लिए स्थाई व अस्थाई निर्माण कार्य तेजी से चल रहे है। महाकुंभ मेला 2025 के मेला अधिकारी विजय किरन आनंद ने बताया कि सभी निर्माण कार्य अक्टूबर 2024 तक पूरे हो जाएंगे। उन्होंने बताया कि इस बार करीब 40 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं के आने की संभावना है।

विजय किरन आनंद ने बताया कि बीच–बीच में जहां विभागों के प्रमुख सचिव और अन्य वरिष्ठ लोग स्थायी कार्यों का निरीक्षण करेंगे। कहा कि जिन विभागों के स्थाई कार्य हो रहे है उनमें लोक निर्माण विभाग, नगर निगम, जल निगम, (प्रयागराज विकास प्राधिकरण), जल निगम, बाढ़ खंड, सेतु निगम, उप्र पावर कारपोरेशन और मेला प्राधिकरण सहित अन्य प्रमुख विभाग हैं। शासन ने जो बजट आवंटित किया था वह सभी विभागों को कार्य के लिए आवंटित कर दिया गया है। शेष बजट भी शीघ्र आवंटित किया जाएगा जिससे कि महाकुंभ मेला के कार्य प्रभावित न हो।

मेला अधिकारी ने बताया कि कुंभ मेला 2018–19 में देश और विश्व से 25 करोड़ से अधिक श्रद्धालु गंगा और संगम स्नान करने आए थे। उन्होंने बताया कि 2024–25 के महाकुंभ मेले में देश और विदेश से करीब 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के संगम नगरी पहुंचने की संभावना है ऐसे में व्यापक स्तर पर तैयारियां अभी से शुरू कर दी गई है। उन्होंने बताया कि इस दौरान मेला क्षेत्र का दायरा भी बढ़ाया जाएगा जिससे कि लोगों को किसी भी प्रकार की असुविधा न होने पाये। उन्होंने बताया कि मेलाक्षेत्र तक स्नानार्थियों, श्रद्धालुओं और कल्पवासियों आने–जाने के लिए व्यापक स्तर पर व्यवस्था की जा रही है।

इस बार कोशिश की जा रही है कि लोग मेला क्षेत्र में अधिक से अधिक गंगा और संगम के निकट तक अपने वाहनों से सुविधापूर्वक पहुंच सके। इसके लिए अलग–अलग सेक्टरों में व्यापक स्तर पर पार्किंग की भी तैयारियां की जा रही है, जिससे कि लोगों को आने – जाने में कोई परेशानी या असुविधा न होने पाए। दो दर्जन से ज्यादा प्रमुख सड़कों को और चौड़ा किया जा रहा है, वही फाफामऊ, झूंसी और नैनी क्षेत्र से भी जो प्रमुख मार्ग मेला क्षेत्र की तरफ जाते हैं उन को भी चौड़ा किया जाएगा और लोगों को मेला क्षेत्र में आने – जाने में कोई परेशानी न होने पाए। मुख्य स्नान पर्व के अतिरिक्त सिटी बसें व्यापक स्तर पर चलाई जाएंगी

बॉलीवुड | मन की बात

द केरल स्टोरी के समर्थन में आए अनुराग कश्यप

पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने अपने राज्य में द केरल स्टोरी के प्रदर्शित नहीं होने दिया है। राज्य सरकार ने पश्चिम बंगाल में कानून-व्यवस्था का हवाला देते हुए फिल्म पर बैन लगा दिया है। सुदीप्तो सेन के निर्देशन में बनी और अदा शर्मा स्टारर यह फिल्म रिलीज होने के पहले से ही विवादों से घिरी है। वहीं बहुत से लोग द केरल स्टोरी के पक्ष में भी हैं। इस लिस्ट में अब अनुराग कश्यप कश्यप का नाम भी शामिल हो गया है। निर्देशक ने बिना नाम लिए सोशल मीडिया पर एक क्रिप्टिक पोस्ट शेयर की है। उन्होंने ने फ्रांसीसी लेखक वोल्टेयर की एक कहावत पोस्ट में साझा की है। अनुराग कश्यप द्वारा साझा किए गए पोस्ट में लिखा था, मैं आपकी बातों से सहमत नहीं हूं, लेकिन मैं आपके कहने के अधिकार की मरते दम तक रक्षा करूंगा। आप फिल्म से सहमत हैं या नहीं, यह प्रचार हो, काउंटर प्रोपगंडा, आपजिनक या नहीं, लेकिन इस पर प्रतिबंध लगाना गलत है। अनुराग ने फिल्म निर्माता सुधीर मिश्रा की हाल ही में रिलीज हुई फिल्म अफवाह का भी सपोर्ट किया और लोगों से देखने के आग्रह किया। फिल्ममेकर में लिखा, आप प्रोपगैंडा से लड़ना चाहते हैं, तो जाकर फिल्म देखें जो सोशल मीडिया के दुरुपयोग के खिलाफ आवाज उठाती है। फिल्म दिखाती है कि निहित पूर्वाग्रह को कैसे नफरत और अशांति पैदा करने के लिए हथियार बनाया जाता है। अनुराग ने कहा कि यह सिनेमाघरों में लगी हुई है और इसका नाम अफवाह है। लड़ने का यही सही तरीका है। द केरल स्टोरी की कहानी केरल की मासूम हिंदू महिला के इर्द-गिर्द बुनी गई है, जिसका इस्लामिक दोस्तों द्वारा ब्रेनवॉश कर दिया जाता है। उसका धर्म परिवर्तन कराया जाता है। इतना ही नहीं उसे आईएसआईएस आतंकवादी संगठन में भेज दिया जाता है। फिल्म सुदीप्तो सेन द्वारा निर्देशित और विपुल अमृतलाल शाह द्वारा निर्मित है। फिल्म सत्या घटना पर आधारित होने का दावा करती है।

फिर धूम मचाएगी एकता और रिया की जोड़ी

एकता कपूर ने रिया कपूर के साथ अपनी अपकमिंग मूवी की अनाउंसमेंट कर दी है। इस मूवी से पहले भी एकता और रिया कपूर ने साथ काम किया हैं। हालांकि अभी तक इस अपकमिंग मूवी का टाइटल कंफर्म नहीं हो पाया है। दोनों ने मिलकर एक बार फिर से दर्शकों को एंटरटेन करने की तैयारी में लग गई है। वहीं फैंस भी फिल्म से जुड़ी अपडेट जानने को हैरान हैं।

एकता कपूर और रिया कपूर के इस नए प्रोजेट की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। बालाजी टेलीफिल लिमिटेड और अनिल कपूर फिल्म कुनिकेशन नेटवर्क के बैनर तले बनने वाली ये मूवी 22 सितंबर 2023 को रिलीज की जाएगी। इसी वजह से मूवी पर काम तेजी से शुरू कर दिया गया है, ताकि फिल्म समय पर पूरी हो सके। रिया कपूर और एकता कपूर अपकमिंग फिल्म तीन औरतों की लाइफ पर फोकस्ड होने वाली है। जैसे-जैसे वे जिंदगी में आगे बढ़ने की कोशिश करती हैं। वैसे ही वैसे उनकी लाइफ बदलने लगती है, और वे सभी झूठ के जाल में फस जाती हैं। बता दें इससे पहले भी दोनों ने वीरे दी वेडिंग की थी, जिसमें भी 4 दोस्तों की कहानी थी। ये फिल्म बॉस ऑफिस पर हिट रही थी।

भोजपुरी | मसाला

इंतजार खत्म : ऋतिक- सैफ की विक्रम वेधा की ओटीटी पर एंट्री कल

ऋतिक रोशन और सैफ अली खान की एशन थ्रिलर फिल्म विक्रम वेधा ओटीटी पर स्ट्रीम होने जा रही है। फिल्म बीते साल थिएटर्स में रिलीज हुई थी और बॉस ऑफिस पर ठीक-ठाक कमाई की थी।

विक्रम वेधा के ओटीटी रिलीज का इंतजार कर रहे फैंस को जियो सिनेमा ने खुशखबरी दी है। फिल्म की रिलीज की जानकारी देते हुए ओटीटी प्लेटफॉर्म ने ऑफिशियल सोशल मीडिया पेज पर अपडेट शेयर की है। फिल्म 12 मई को स्ट्रीम होगी और बिना सक्रिप्शन विक्रम वेधा को देखा जा सकता है यानी जियो सिनेमा पर फिल्म फ्री में उपल होगी।

विक्रम वेधा का ट्रेलर शेयर करते हुए जियो सिनेमा ने कैप्शन में लिखा, फ्ढ्ढक्क्रू में टी की जंग के बीचज्ब देखो विक्रम वेधा की जंग। इसके साथ स्ट्रीम डेट के बारे में बताते हुए आगे लिखा, शुक्रवार 12 मई को जियो सिनेमा पर विक्रम वेधा का वर्ल्ड डिजीटल प्रीमियर देखिए।

विक्रम वेधा में ऋतिक रोशन और सैफ अली खान के साथ राधिका आप्टे भी अहम किरदार में हैं। फिल्म को गायत्री और पुष्कर जोड़ी ने डायरेट किया है। फिल्म 30 सितंबर 2022 को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था। बता दें कि विक्रम वेधा इसी नाम की तमिल फिल्म का हिंदी रीमेक है। ओरिजिनल फिल्म को भी गायत्री और पुष्कर ने डायरेट किया था, जिसमें आर माधवन और विजय सेतुपति लीड रोल में थे। विक्रम वेधा की कहानी की बात करें तो फिल्म ऋतिक रोशन और सैफ अली खान के इर्द-गिर्द घूमती है। विक्रम एक ईमानदार पुलिस ऑफिसर है, लेकिन उसकी टीम कर्पट है। वहीं, वेधा एक जाना-माना क्रिमिनल है।

अजब-गजब | इस देश में मास्क ने छीन ली चेहरे की मुस्कुराहट

यहां हंसना भूल गए लोग, मुस्कुराना सीखने के लिए कर रहे कोचिंग

मुस्कुराना जीवन के लिए बहुत जरूरी है। डॉर कहते हैं कि चेहरे पर प्यारी सी मुस्कान हर बीमारी का इलाज है। लेकिन या आपने कभी सोचा होगा कि मुस्कुराना सीखने के लिए भी पैसे देने पड़ेंगे? ट्रेनर रखने होंगे, कोचिंग सेंटरों में जाना होगा। शायद नहीं। मगर जापान में ऐसा हो रहा है। वहां के लोग मुस्कुराना भूल गए हैं। अब उन्हें यह सीखना पड़ रहा है और इसके लिए भारी भरकम रकम चुकानी पड़ रही है।

डेली मेल की रिपोर्ट के मुताबिक, कोरोना महामारी की वजह से 3 साल तक लोग मास्क के पीछे चेहरा छिपाकर रहे। पिछले हते सरकार ने सभी पाबंदियां हटा लीं तो पता चला कि लोग मुस्कुराना भूल गए हैं। उन्हें डर है कि वे इतने लंबे समय से मास्क पहन रहे हैं कि भूल गए हैं कि मुस्कुराना कैसे है। इसके लिए पैसे खर्च कर रहे हैं। एपर्ट रख रहे हैं। कई लोगों को लगता है कि मास्क की वजह से अब उनके चेहरे पर हंसमुख भाव नहीं आ रहे हैं, इसलिए विशेषज्ञों का रुख कर रहे हैं।

जापान टाइ से बात करते हुए, स्माइल

ट्रेनर मिहो किटानो ने कहा-मैंने तमाम लोगों से सुना कि भले ही वे अपना मास्क हटा सकते हैं लेकिन अभी भी वह चेहरे का निचला हिस्सा नहीं दिखाना चाहते। ोंकि उन्हें डर है कि मुस्कुराकर वह जवाब नहीं दे पाएंगे। कुछ को लगता है कि अगर वे ज्यादा दबाव डालकर मुस्कुराएं भी तो चेहरे पर और आंखों के चारों ओर ज्यादा झुर्रियां नजर आने लगती हैं, इससे वे बुजुर्ग दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है कि उनका चेहरा लटक गया है। इसलिए वह जबरदस्ती मुस्कुराना नहीं चाहते।

किटानो ने बताया कि उनकी कंपनी स्माइल फेशियल मसल एसोसिएशन का कारोबार इसी वजह से आसमान छूने लगा है। लोग कोविड के पहले जैसा चेहरा और हावभाव देखना चाहते हैं। जब उनसे पूछा गया कि आखिर सेंटर पर होता या है? उन्होंने जवाब दिया, स्माइल एसपर्ट मुस्कान में मदद करने वाले योगाास कराती हैं। उन्हें काटने के लिए कुछ चीजें दी जाती हैं ताकि उनके गाल की मांसपेशियों को ऊपर उठाने में मदद मिले। दांत दिखाने में मदद मिले। वह कहती हैं कि मैं कई ऐसे लोगों से मिलती हूं जो मुस्कुराने में अच्छे नहीं हैं, लेकिन उन्हें किया जा सकता है। उनकी मसल्स को ठीक करना होगा। भुजाओं का व्यायाम कराना होगा।

बर्फ खाकर जिंदा रहा 8 साल का बच्चा 20 डिग्री टेंरपेचर में ऐसे बचाई जान

कोई बर्फीले तूफान में फंस जाए, रास्ता नजर न जाए। आसपास कोई दिखे न, तो या हालत होगी समझा जा सकता है। मगर अमेरिका में 8 साल का एक बच्चा -20 डिग्री टेंरपेचर में महज एक वुलेन टीशर्ट पहनकर दो दिन तक जिंदा रहा। प्यास लगी तो बर्फ खाकर प्यास बुझाई। बचने के लिए उसने ऐसी तकरीब अपनाई कि बचाव दल भी देखकर हैरान था। मामला अमेरिका के विस्कॉन्सिन का है। 8 साल का नांटे नीमी परिवार के लिए जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने के लिए जंगल गया लेकिन वहां रास्ता भटक गया। फिर वह अंदर की ओर चलता चला गया। उसे कुछ भी रास्ता नहीं सूझ रहा था। वह पगडंडियों पर चलता रहा। जब उसे लगा कि वह अब निकल नहीं सकता तो उसने एक छोटी पहाड़ी से नीचे छलांग लगाई। एक ऐसी जगह जाकर छिप गया जहां एक पेड़ था। उस जगह बर्फ बहुत थी और ठंड भी खूब लग रही थी, इससे बचने के लिए बच्चे ने पेड़ों की शाखाएं तोड़ीं। उनसे एक झोपड़ीनुमा घर बनाया। पत्तियों से एक कंबल जैसी चीज तैयार की और उसी से बिस्तर बर्फ खाता था। इन पत्तियों की बदौलत ने उसे -20 डिग्री टेंरपेचर सहन कर लिया। जबकि उसने सिर्फ एक स्वेटशर्ट पहना हुआ था। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने बचाव अभियान शुरू किया। 150 से ज्यादा सुरक्षाकर्मियों आसमान, पानी और पैदल उसे तलाशने निकले। नौ हेलीकॉप्टर्स लगाए गए। लगभग 40 वर्गमील क्षेत्र का कोना कोना तलाशा गया। आखिरकार वह एक लॉग के नीचे छिपकर बैठा हुआ नजर आया। मिशिगन पुलिस ने पहले उसे हेलीकॉप्टर के जरिए बाहर निकालना चाहा लेकिन बच्चे ने कहा कि वह पैदल ही आना चाहता है। आखिरकार वह बाहर आ गया और अभी सुरक्षित है।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक-सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।